International Journal of Social Science Research (IJSSR)
Volume- 2, Issue- 4 | July - August 2025 ISSN: 3048-9490

सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं के मानसिक दबाव एवं अवसाद की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. भूमिका मिश्रा
सहायक अध्यापक
समाजशास्त्र विभाग समाजिक विज्ञान अध्ययनशाला, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग , छ.ग.

संक्षेपिका

प्रस्तुत शोध अध्ययन छत्तीसगढ राज्य के रायपुर नगर के सरकारी एवं गैरसरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में मानसिक दबाव एवं अवसाद का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। अध्ययन में तथ्यों का संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन अपकरण का उपयोग किया गया है। शोध अध्ययन से प्राप्त तथ्य यह दर्शाता है कि सरकारी एवं गैरसरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिलाओं में परिवार और पेशे के बीच में सामंजस्य स्थापित करने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। यद्यपि समाज ने उनकी उपयोगिता और महत्व को स्वीकार कर लिया है, लेकिन इन्हें जिस पारिवारिक सहारे की जरूरत होती है, उससे अधिकतर कामकाजी महिलाएं आज भी वंचित है। महिलाएं सामाजिक व्यवस्था की धुरी मानी जाती है। इन्हीं से देश का निर्माण होता है। अतः इनका स्वस्थ्य रहना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि एक स्वस्थ्य महिला के पिछे स्वस्थ्य राष्ट्र का निर्माण होता है। दोहरे दायित्व के कारण कामकाजी महिलाएं मानसिक, संवेगात्मक एवं शारीरिक तौर पर प्रभावित हो रही है, क्योंकि महिलाएं दोहरे दायित्व के कारण कई समस्याओं से गिर चुकी है तथा अतः इन्हें सेहत के प्रति जागरूक करने की जरूरत है। परिवार के सदस्यों तथा कार्यक्षेत्र में कार्यरत लोगों को उनकी सहायता के प्रति प्रोत्साहन करना बहुत जरूरी हो गया है।

प्रस्तावना

समाज में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य अपनी शक्तियों को व्यवहार में लाता है। जन्म से मृत्यु तक मनुष्य निरंतर सीखता रहता है। मनुष्य को शिक्षा देने का कार्य घर पर उसके परिवार के लोग सहयोग करते है तथा बाहर एक शिक्षक ही होता है जो उसे आगे सीखने की प्ररणा देता है अतः वह शिक्षक अगर महिला हो तो छोटे बच्चों के काफी करीबी हो जाती है और छात्र-छात्राओं को सीखाने में बहुत सहयोगी हो जाती है क्योंकि महिला शिक्षिकों से बच्चें जल्दी ही घुल-मिल जाते है। एक महिला अपना परिवार और बाहर का काम दोनों ही संभाल सकती है। अगर एक महिला विद्यालयों की शिक्षिका होगी तो भी वे अपना परिवार और बच्चों के साथ-साथ बाहर विद्यालयों में एक शिक्षिका बन कर भी अपने विद्यार्थियों को भी अच्छें से संभाल सकती है।

महिलाएं चाहे सरकारी विद्यालयों में हो या फिर गैर-सरकारी विद्यालयों में हो दोनों ही क्षेत्रों में कार्यरत महिलाएं अपने यादित्वों को अच्छों से ही संभालती है और अपने कार्यो के साथ-साथ परिवार का भी ध्यान भी देती है। पर कभी-कभी उनके जीवन में अनेकों कठिनाईयां भी आती है जिसका सामना वे बड़ी सहनशीलता से करती है जिससे उनकी वजह से कोई को कोई कष्ठ न हो।

शोध साहित्य का अध्ययन

यादव विजय बहादुर 2018, प्रस्तुत अध्ययन से ज्ञात होता है कि गैर-सरकारी माध्यमिक विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण, सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण से अच्छा पाया गया क्योंकि गैरसरकारी माध्यमिक

विद्यालयों के संगठनात्मक प्रतिक्रिया, भूमिका की स्पष्टता और आदान-प्रदान सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की अपेक्षा अधिक अच्छा था।

गुप्ता विजय एवं कुमारी राखी 2019, प्रस्तुत अध्ययन से ज्ञात होता है कि शिक्षकों को शिक्षण कौशल पर काम करने में कई परेशानिया होता है फिर भी चाहे वे सरकारी हो या गैरसरकारी अपने शिक्षा कौशल को बेहतर तरीके से अपनी प्रशिक्षण आवश्यकताओं की पहचान करने में सक्षम हो जाते है।

शर्मा अंजु 2020, प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक, सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक स्तर पर उच्च समायोजन पाया गया जबकि गैरसरकारी विद्यालायों के शिक्षकों में मध्यम समायोजन पाया जाता है। संभतया कारण यह हो सकता है कि सरकारी एवं गैरसरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के चयन मापदंड प्रक्रिया एक समान होते हुए भी दोनों के सेवा शर्तो सुविधाओं वेतन आदि से अनेक विषमता देखने को मिलती है।

विश्वकर्मा जागृति एवं मौर्य दिनेश 2021, प्रस्तुत अध्ययन से ज्ञात होता है कि सरकारी श्रेणी के विद्यालयों के वेतन हेतु धन मुहैया सरकार कराती है, साथ ही शिक्षकों कर्मचारियों की सेवा शर्तो में प्रतिबद्धता आदि निश्चित होती है। गैरसरकारी शिक्षण संस्थाओं में आधारभूत सुविधाएं शिक्षक एवं कर्मचारियों के वेतन भत्ते संस्था संचालित करने वाले समूह व्यक्ति द्वारा एवं सेवा शर्त सरकार द्वारा निर्धारित मापदंडानुसार व्यवस्थित होता है।

तिवारी रविभूषण 2021, प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक स्थिति का विद्यार्थियों के मानसिक स्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सहसंबंध नहीं पाया जाता है।

शोध प्रविधि

अध्ययन क्षेत्र - वर्तमान में छत्तीसगढ़ में कुल 33 जिले आते है और 5 संभाग हैए जो मध्यप्रदेश से अलग होने के समय 18 जिले थे पर अब वर्तमान में 28 जिले - रायपुर, कवर्धा, कांकेर, कोरबा, कोरिया, जशपुर, जांजगीर-चाम्पा, मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर, सक्ती, सारंगढ़-बिलाईगढ़, मोहला-मानपुर, दंतेवाड़ा, दुर्ग, धमतरी, बिलासपुर, बस्तर, महासमुन्द, राजनांदगांव, रायगढ़, सरगुजा, बलौदाबाजार, बालोद, मुंगेली, बेमेतरा, सूरजपुर, गरियाबंद, सुकमा, बलरामपुर, कोंडागॉव, नारायणपुर, बीजापुर, गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही, खैरागढ़-छुईखदान-गंडई है, जो छत्तीसगढ़ के अंतर्गत आते है।

प्रस्तुत अध्ययन रायपुर शहर के सरकारी और गैरसरकारी विद्यालय संस्थानों के शहरी क्षेत्र में कार्यरत कामकाजी महिलाओं को लिया गया है, जो शिक्षिकाएं है। रायपुर शहर में सरकारी एवं गैरसरकारी विद्यालयों में शिक्षिकाओं का अध्ययन किया गया है, जिसमें हम शोध अध्ययन के लिए 300 महिलाओं को150 सरकारी एवं 150 गैरसरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं को लिया गया है।

उत्तरदाताओं का चुनाव - प्रस्तुत अध्ययन रायपुर शहर के सरकारी और गैरसरकारी विद्यालय संस्थानों के शहरी क्षेत्र में कार्यरत कामकाजी महिलाओं को लिया गया है, जो शिक्षिकाएं है। रायपुर शहर में सरकारी विद्यालयों में शिक्षिकाओं की संख्या 80 हैए जिसमें 50 शिक्षिकाओं का अध्ययन किया गया है एवं गैरसरकारी विद्यालयों में कुछ शिक्षिकाओं की संख्या 100 हैए जिसमें 50 शिक्षिकाओं का अध्ययन किया गया है। जिसमें हम शोध अध्ययन के लिए 100 महिलाओं को50 सरकारी एवं 50 गैरसरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं का अध्ययन किया गया है। जिसमें देव निर्दशन विधि द्वारा चुना गया है।

तालिका

क्र.	गैरसरकारी स्कूल	न्यादर्श
1	पवन पुत्र विद्या मंदिर, जोरा, रायपुर (छ.ग.)	25
2	आदर्श सरस्वती उ. मा. विद्या मंदिर, कासीराम नगर, रायपुर (छ.ग.)	20
3	श्वेता विद्या मंदिर, न्यू राजेन्द्र नगर, रायपुर (छ.ग.)	20
4	भारतीय विद्या मंदिर, महावीर नगर, रायपुर (छ.ग.)	19
5	संत श्री आशराम गुरूकुल स्कूल, वी.आई.पी. रोड, रायपुर (छ.ग.)	18
6	संस्कार भारतीय उ. मा. विद्यालय, बूढ़ापारा, रायपुर (छ.ग.)	18
7	श्री विनय विद्या मंदिर, पचपेड़ी नाका, रायपुर (छ.ग.)	15
8	शिशु शिक्षा केन्द्र, बूढ़ापारा, रायपुर (छ.ग.)	15
	योग	150

क्र.	सरकारी स्कूल	न्यादर्श
1	ज. रा. दानी कन्या शाला, बूढ़ापारा, रायपुर (छ.ग.)	43
2	शासकीय उ. मा. शाला, कृषक नगर जोरा, रायपुर (छ.ग.)	41
3	शासकीय उ. मा. शाला, लालपुर, रायपुर (छ.ग.)	36
4	शहीद संजय यादव उ. मा. शाला, संजय नगर, रायपुर (छ.ग.)	30
	योग	150

स. तथ्यों का संकलन की प्रविधि एवं उपकरण - प्रस्तुत शोध पत्र प्राथमिक व द्वितीयक समंकों पर आधारित है। प्राथमिक समंकों का संकलन प्रश्नावली व साक्षात्कार अनुसूची की सहायता से किया गया है तथा द्वितीयक समंकों पर उत्तरदाताओं का अवलोकन के माध्यम से साक्षात्कार पूर्ण किया गया है।

द. तथ्यों का प्रस्तुतीकरण - प्रस्तुत अध्ययन में तथ्यों के समुचित संकलन हेतु एवं अध्ययन की वस्तुनिष्ठता के लिए साक्षात्कार अनुसूची उपकरण की सहायता से प्राथमिक तथ्यों का संकलन किया गया है। इस अध्ययन हेतु साक्षातकार निर्देशिका का भी प्रयोग किया गया है। जिससे भी अध्ययन से संबंधित वस्तुनिष्ठ तथ्यों का संकलन किया गया है। इसके अतिरिक्त उत्तरदाताओं की दशा एवं उपलब्ध सुविधाओं हेतु अवलोकन प्रविधि के द्वारा भी तथ्य संकलन किया गया है। अध्ययन के द्वितीयक तथ्यों के संकलन हेतु विभिन्न शोध अध्ययनों, शोध आलेख, पत्र-पत्रिकाओं तथा शासन के द्वारा प्रसारित विभिन्न सूचनाओं का संकलन किया गया है। जिससे अध्ययन को पूर्णतः प्रभावित एवं सारगर्भित बनाया जा सके।

अध्ययन का उद्देश्य

1. सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के मासिक वेतन की स्थिति का
2. तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं में मानसिक दबाव और अवसाद की स्थिति को ज्ञात करना।
4. सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं का काम को लेकर शारीरिक

5. परेशानी की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. कार्यरत शिक्षिकाओं का कार्य क्षेत्र में समस्याओं की स्थिति का अध्ययन करना।

इस निर्देशन का चुनाव कम खर्चीला होने के साथ-साथ उत्तरदाताओं की सुविधा और उपलब्धि को ध्यान में रखकर किया गया है। इस प्रपत्र को पूर्ण करने हेतु तथ्यों के संकलन में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा तथ्यों का संकलन अत्यंत जटिल के साथ-साथ कष्टकारी भी रहा। इस अध्ययन के अंतर्गत सरकारी एवं गैर-सरकारी चयनित शिक्षिकाओं की विद्यालयों में वातावरण के साथ-साथ आर्थिक स्थिति का भी अध्ययन किया गया। कार्यरत शिक्षिकाओं के संबंध में साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से उनका अवलोकन किया गया है।

तालिका 01

उत्तरदाताओं का मासिक वेतन की स्थिति

क्र.	उत्तरदाताओं का मासिक वेतन की स्थिति	सरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत	गैरसरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत
1	1000-20,000	10	10	50	50
2	21,000-40,000	20	20	40	40
3	41,000-60,000	60	60	10	10
4	61,000-80,000	10	10	00	00
	योग	100	100	100	100

सारिणी क्रमाक 01

उत्तरदाताओं का मासिक वेतन की स्थिति

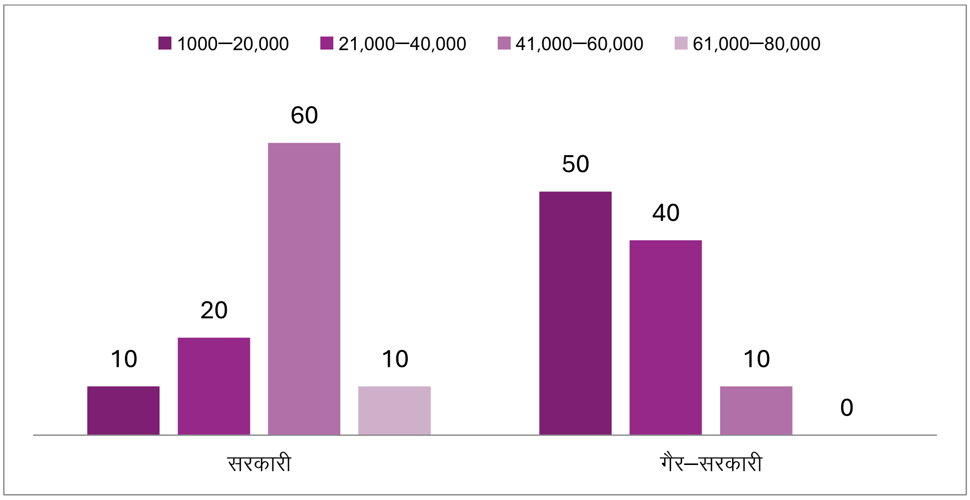

तालिका क्रमांक 01 में उत्तरदाताओं का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि सरकारी और गैरसरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं में से मासिक वेतन में 1000-20000 के बीच 10 प्रतिशत सरकारी शिक्षिकाओं में से तथा गैरसरकारी में 50 प्रतिशत है, 21000-40000 के बीच सरकारी शिक्षिकाओं में से 20 प्रतिशत है तथा गैरसरकारी में 40 प्रतिशत है, 41000-60000 के बीच सरकारी में 60 प्रतिशत है तथा गैरसरकारी में 10 प्रतिशत है तथा 61000-

80000 के बीच सरकारी शिक्षिकाओं में 10 प्रतिशत है। अतः स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों में कार्य करती है जिस कारण से उनका मासिक वेतन भी सर्वाधिक है लेकिन गैरसरकारी विद्यालयों में कार्य करने वाली शिक्षिकाओं का मासिक वेतन बहुत कम होता है।

तालिका क्रमाक 02

उत्तरदाताओं में मानसिक दबाव और अवसाद की स्थिति का अध्ययन

क्र.	उत्तरदाताओं में मानसिक दबाव और अवसाद की स्थिति का अध्ययन	सरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत	गैरसरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत
1	व्यस्त काम	60	40	50	34
2	नौकरी का तनाव	40	26	60	40
3	मानसिक थकान	50	34	40	26
	योग	150	100	150	100

सारिणी क्रमाक 02

विद्यालयों में कार्यरत उत्तरदाताओं में मानसिक दबाव और अवसाद की स्थिति का अध्ययन

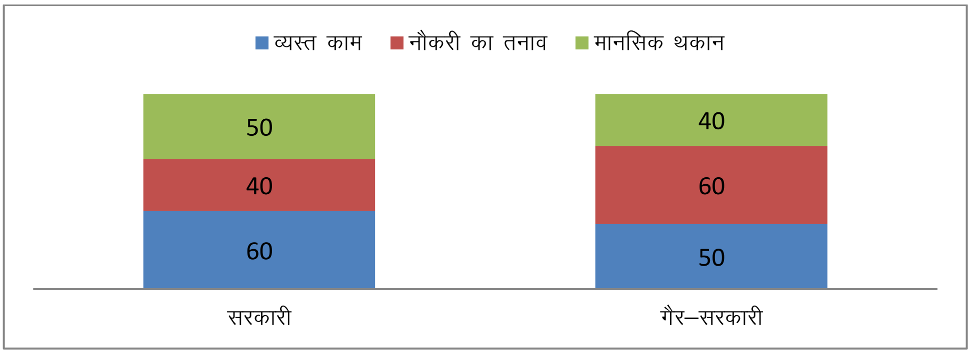

तालिका क्रमाक 02 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों की 40 प्रतिशत शिक्षिकाएं व्यस्त कामों को लेकर मानसिक दबाव महसूस करती है तथा गैरसरकारी में 34 प्रतिशत, सरकारी में 26 प्रतिशत शिक्षिकाओं को नौकरी का तनाव है तथा गैरसरकारी में 40 प्रतिशत है तथा सरकारी में 34 प्रतिशत शिक्षिकाएं ऐसी भी है जिसे काम को लेकर मानसिक थकान भी होता है क्योंकि वे विद्यार्थियों को संभालते-संभालते भी थक जाती है। वहीं गैरसरकारी में 26 प्रतिशत ऐसी महिलाएं है जिन्हें मानसिक थकान हो जाता है। अतः स्पष्ट होता है कि सरकारी और गैरसरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं के साथ उनके दैनिक कार्यो में घर और बाहर दानों ही जागाओं में मानसिक दबाव और अवसाद का होना देखा गया क्योंकि महिलाओं का जीवन ही मानसिक दबाव और अवसाद से भरा हुआ है उन्हें विद्यालय में चाहे जो भी काम हो या परिवारिक काम हो मानसिक दबाव और अवसाद हो ही जाता है। मानसिक दबाव और अवसाद के कारण कई बार महिलाएं नकारात्मक भी हो जाती है।

तालिका क्रमाक 03

उत्तरदाताओं का काम को लेकर शारीरिक परेशानी की स्थिति

क्र.	उत्तरदाताओं का काम को लेकर शारीरिक परेशानी की स्थिति	सरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत	गैरसरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत
1	शारीरिक तनाव	60	40	50	34
2	दोहरा दायित्व	50	34	60	40
3	स्वयं के लिए समय का अभाव	40	26	40	26
	योग	150	100	150	100

तालिका क्रमाक 03

उत्तरदाताओं का काम को लेकर शारीरिक परेशानी की स्थिति

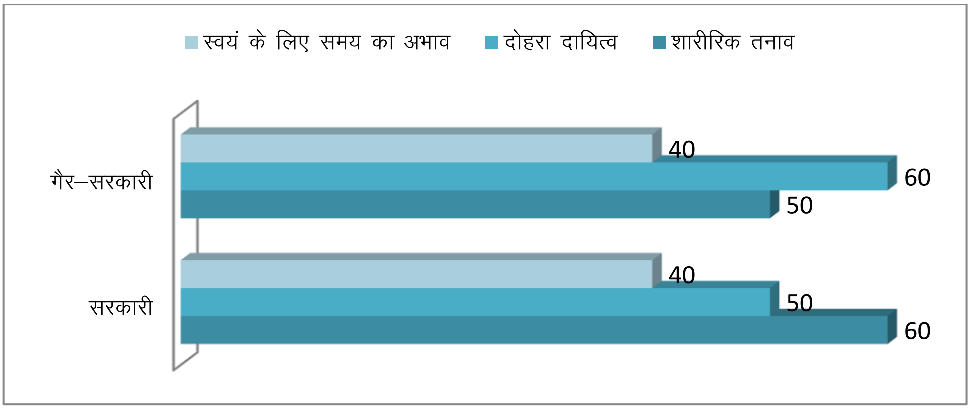

उपर्युक्त तालिका क्रमाक 03 का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि सरकारी और गैरसरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं को शारीरिक परेशानियां होती ही है जिसका 40 प्रतिशत कारण शारीरिक तनाव तथा गैरसरकारी शिक्षिकाओं का 34 प्रतिशत है, सरकारी शिक्षिकाओं में से 34 प्रतिशत दोहरा दायित्व से परेशान है तथा गैरसरकारी में 40 प्रतिशत है तथा सरकारी शिक्षिकाओं में से 26 प्रतिशत स्वयं के लिए समय का अभाव से परेशान है तो गैरसरकारी में 26 प्रतिशत शिक्षिकाएं स्वयं को समय नहीं दे पाती है। अतः स्पष्ट होता है कि सरकारी और गैरसरकारी दोनो ही विद्यालयों की शिक्षिकाओं को काम के प्रति शारीरिक परेशानी होती है।

तालिका क्रमाक 04

उत्तरदाताओं का शैक्षणिक कार्य के सलग्न हुए वर्ष की स्थिति

क्र.	उत्तरदाताओं का शैक्षणिक कार्य के सलग्न हुए वर्ष की स्थिति	सरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत	गैरसरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत
1	1-10 वर्ष	10	06	65	43

2 3 4 -	11-20 वर्ष 21-30 वर्ष 31-40 वर्ष	20 70 50	14 46 34	55 25 05	36 16 03
	योग	150	100	150	100

सारिणी क्रमाक 04

उत्तरदाताओं का शैक्षणिक कार्य के सलग्न हुए वर्ष की स्थिति

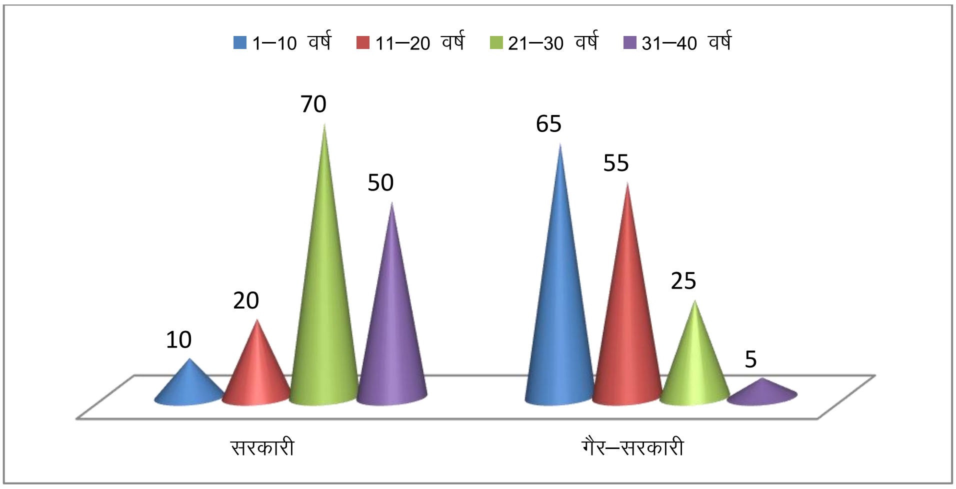

उपर्युक्त वृत्त आलेख क्रमाक 04 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं के शैक्षणिक कार्य के सलग्न हुए वर्ष को देखा गया तो 1-10 वर्ष में 6 प्रतिशत शिक्षिकाएं आई है वहीं गैरसरकारी में 43 प्रतिशत शिक्षिकाएं आई है, 11-20 वर्ष में सरकारी शिक्षिकाओं में से 14 प्रतिशत शिक्षिकाएं आई तो वहीं गैरसरकारी में 36 प्रतिशत आई है, 21-30 वर्ष में सरकारी शिक्षिकाओं में से 46 प्रतिशत शिक्षिकाएं आई तो वहीं गैरसरकारी शिक्षिकाओं में से 16 प्रतिशत शिक्षिकाएं आई है तथा 31-40 वर्ष में सरकारी शिक्षिकाओं में से 34 प्रतिशत शिक्षिकाएं आई है, तो गैरसरकारी में 3 प्रतिशत आई है।

तालिका क्रमाक 05

विद्यार्थियों के अभिभावकों का शिक्षिकाओं के साथ संबंध की स्थिति

क्र.	विद्यार्थियों के अभिभावकों का शिक्षिकाओं के साथ संबंध की स्थिति	सरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत	गैरसरकारी विद्यालय आवृत्ति	प्रतिशत
1 2 3 4 -	ठीक अच्छा सामान्य असंतुष्टि	30 60 40 20	20 40 26 14	60 50 30 10	40 34 20 06

	योग	150	100	150	100

सारिणी क्रमाक 05

विद्यार्थियों के अभिभावकों का शिक्षिकाओं के साथ संबंध की स्थिति

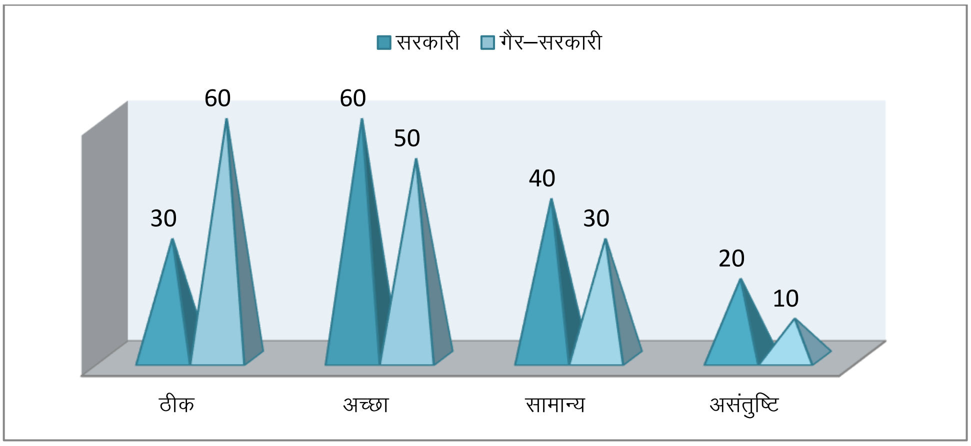

उपर्युक्त तालिका क्रमाक 06 का अवलोकन करने के स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओ का विद्यार्थियों के अभिभावकों के साथ संबंध की स्थिति में 20 प्रतिशत ठीक है, तो गैरसरकारी शिक्षिकाओं के साथ 40 प्रतिशत ठीक है, सरकारी शिक्षिकाओं में से 40 प्रतिशत अच्छा है, तो गैरसरकारी शिक्षिकाओं के साथ 34 प्रतिशत अच्छा है, सरकारी शिक्षिकाओं के साथ अभिभावको का 26 प्रतिशत सामान्य है वहीं गैरसरकारी के साथ 20 प्रतिशत है तथा सरकारी शिक्षिकाओं के साथ 14 प्रतिशत शिक्षिकाएं असंतुष्ट है, तो गैर-सरकारी में 6 प्रतिशत असंतुष्ट है। इसका सबसे बड़ा कारण है सरकारी विद्यालयों की अधिकतर शिक्षिकाएं अभिभावकों से ज्यादा सम्पक्र नहीं कर पाती क्योंकि उनके विद्यालयों में पैरेंट्स मीटिंग नहीं रखी जाती है। शिक्षिकाओं का कहना है कि पैरेंट्स मीटिंग से कुछ नहीं होता है। परिवार वाले विद्यार्थियों पर कोई ध्यान नहीं देते है जिस वजा से पैरेंट्स मीटिंग रखना समय की बरबादी है। वहीं गैर-सरकारी में उनके और अभिभावकों के बीच का संबंध भी अच्छा रहता है क्योंकि हर महीने विद्यालय में पैरेंट्स-टीचर्स मीटिंग रखी जाती है जिसमें अभिभावको को विद्यालय बुलाया जाता है। अभिभावकों को भी जो भी परेशानी होती है वे बेझिझक शिक्षिकाओं से पूछ सकत है।

निष्कर्ष

उत्तरदाताओं का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि सरकारी और गैरसरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं में से मासिक वेतन में 1000-20000 के बीच 10 प्रतिशत सरकारी शिक्षिकाओं में से तथा गैरसरकारी में 50 प्रतिशत है, 21000-40000 के बीच सरकारी शिक्षिकाओं में से 20 प्रतिशत है तथा गैरसरकारी में 40 प्रतिशत है, 41000-60000 के बीच सरकारी में 60 प्रतिशत है तथा गैरसरकारी में 10 प्रतिशत है तथा 61000-80000 के बीच सरकारी शिक्षिकाओं में 10 प्रतिशत है। अतः स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों में कार्य करती है जिस कारण से उनका मासिक वेतन भी सर्वाधिक है लेकिन गैरसरकारी विद्यालयों में कार्य करने वाली शिक्षिकाओं का मासिक वेतन बहुत कम होता है। अतः गैरसरकारी विद्यालयों में कार्यरत महिलाएं एक हि विद्यालयों में अधिक सालों तक नहीं टिक पाती है जिससे वे जहां भी विद्यालयों में जाती है फिर से काम वेतन में काम करने के कारण उनका वेतन अधिक नहीं हो पाता है।

प्रस्तुत अध्ययन का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों की 40 प्रतिशत शिक्षिकाएं व्यस्त कामों को लेकर मानसिक दबाव महसूस करती है तथा गैरसरकारी में 34 प्रतिशत, सरकारी में 26 प्रतिशत शिक्षिकाओं को नौकरी का तनाव है तथा गैरसरकारी में 40 प्रतिशत है तथा सरकारी में 34 प्रतिशत शिक्षिकाएं ऐसी भी है जिसे काम को लेकर मानसिक थकान भी होता है क्योंकि वे विद्यार्थियों को संभालते-संभालते भी थक जाती है। वहीं गैरसरकारी में 26 प्रतिशत ऐसी महिलाएं है जिन्हें मानसिक थकान हो जाता है। अतः स्पष्ट होता है कि सरकारी और गैरसरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं के साथ उनके दैनिक कार्यो में घर और बाहर दानों ही जागाओं में मानसिक दबाव और अवसाद का होना देखा गया क्योंकि महिलाओं का जीवन ही मानसिक दबाव और अवसाद से भरा हुआ है उन्हें विद्यालय में चाहे जो भी काम हो या परिवारिक काम हो मानसिक दबाव और अवसाद हो ही जाता है। मानसिक दबाव और अवसाद के कारण कई बार महिलाएं नकारात्मक भी हो जाती है।

प्रस्तुत तालिका का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि सरकारी और गैर-सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं को शारीरिक परेशानियां होती ही है जिसका 40 प्रतिशत कारण शारीरिक तनाव तथा गैरसरकारी शिक्षिकाओं का 34 प्रतिशत है, सरकारी शिक्षिकाओं में से 34 प्रतिशत दोहरा दायित्व से परेशान है तथा गैरसरकारी में 40 प्रतिशत है तथा सरकारी शिक्षिकाओं में से 26 प्रतिशत स्वयं के लिए समय का अभाव से परेशान है तो गैरसरकारी में 26 प्रतिशत शिक्षिकाएं स्वयं को समय नहीं दे पाती है। अतः स्पष्ट होता है कि सरकारी और गैरसरकारी दोनो ही विद्यालयों की शिक्षिकाओं को काम के प्रति शारीरिक परेशानी होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यालय की शिक्षिकाओं को लिया गया है जिसमें गैरसरकारी विद्यालय का अध्ययन करने से पता चला कि मासिक धर्म में भी अपना कार्य करती है। किसी भी प्रकार की छुट्टी नहीं मिल पाती है। गैरसरकारी विद्यालय की शिक्षिकाओं को हमेंशा यह डर लगा रहता है कि अगर ये ज्यादा छुट्टी लेगी तो उन्हें अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ सकता है। लेकिन सरकारी विद्यालय की शिक्षिकाओं को छुट्टी ज्यादा मिलती है वो नहीं भी जाएगी फिर भी उनका वेतन नहीं कटता है और यहां तक कि उनको उनके नौकरी से कोई भी निकाल भी नहीं सकता इस लिए ये मासिक धर्म के समय प्रायाप्त छुट्टी ले लेती है।

प्रस्तुत अध्ययन का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाओं के शैक्षणिक कार्य के सलग्न हुए वर्ष को देखा गया तो 1-10 वर्ष में 6 प्रतिशत शिक्षिकाएं आई है वहीं गैरसरकारी में 43 प्रतिशत शिक्षिकाएं आई है, 11-20 वर्ष में सरकारी शिक्षिकाओं में से 14 प्रतिशत शिक्षिकाएं आई तो वहीं गैरसरकारी में 36 प्रतिशत आई है, 21-30 वर्ष में सरकारी शिक्षिकाओं में से 46 प्रतिशत शिक्षिकाएं आई तो वहीं गैरसरकारी शिक्षिकाओं में से 16 प्रतिशत शिक्षिकाएं आई है तथा 31-40 वर्ष में सरकारी शिक्षिकाओं में से 34 प्रतिशत शिक्षिकाएं आई है, तो गैर-सरकारी में 3 प्रतिशत आई है।

प्रस्तुत अध्ययन का अवलोकन करने के स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओ का विद्यार्थियों के अभिभावकों के साथ संबंध की स्थिति में 20 प्रतिशत ठीक है, तो गैरसरकारी शिक्षिकाओं के साथ 40 प्रतिशत ठीक है, सरकारी शिक्षिकाओं में से 40 प्रतिशत अच्छा है, तो गैरसरकारी शिक्षिकाओं के साथ 34 प्रतिशत अच्छा है, सरकारी शिक्षिकाओं के साथ अभिभावको का 26 प्रतिशत सामान्य है वहीं गैरसरकारी के साथ 20 प्रतिशत है तथा सरकारी शिक्षिकाओं के साथ 14 प्रतिशत शिक्षिकाएं असंतुष्ट है, तो गैरसरकारी में 6 प्रतिशत असंतुष्ट है। इसका सबसे बड़ा कारण है सरकारी विद्यालयों की अधिकतर शिक्षिकाएं अभिभावकों से ज्यादा सम्पक्र नहीं कर पाती क्योंकि उनके विद्यालयों में पैरेंट्स मीटिंग नहीं रखी जाती है। शिक्षिकाओं का कहना है कि पैरेंट्स मीटिंग से कुछ नहीं होता है। परिवार वाले विद्यार्थियों पर कोई ध्यान नहीं देते है जिस वजा से पैरेंट्स मीटिंग रखना समय की बरबादी है। वहीं गैरसरकारी में

उनके और अभिभावकों के बीच का संबंध भी अच्छा रहता है क्योंकि हर महीने विद्यालय में पैरेंट्स-टीचर्स मीटिंग रखी जाती है जिसमें अभिभावको को विद्यालय बुलाया जाता है। अभिभावकों को भी जो भी परेशानी होती है वे बेझिझक शिक्षिकाओं से पूछ सकत है।

सुझाव

- प्रस्तुत शोध कार्य शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है भविष्य में इसे विद्यार्थियों या पारिवारिक सदस्यों को शामिल किया जा सकता है।
- गैरसरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं के लिए उचित वेतन तथा सुविधाओं में वृद्धि की जाये।
- अनुदानित विद्यालयों एवं सरकारी विद्यालयों में होने वाली नियुक्तियों में गैरसरकारी विद्यालयों में से कार्यरत शिक्षिकाओं को अनुभव के आधार पर वरीयता प्रदान की जानी चाहिए।
- गैरसरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं को विद्यालयों में स्थायित्व प्रदान किया जाये जिससे उनमें नौकरी को लेकर असुरक्षा की भावना कम की जा सकें।
- इस प्रकार के शोध अध्ययन कार्य में माध्यमिक स्तर के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं पर भी तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- सरकारी और गैरसरकारी विद्यालय की शिक्षिकाओं को विद्यालय के विद्यार्थियों में व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन करते रहना चाहिए।
- प्रस्तुत शोध कार्य रायपुर नगर के सीजी विद्यालयों के शिक्षिकाओं पर आधारित है इसे सीबीएसई बोर्ड के विद्यालयों के शिक्षिकाओं पर किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध कार्य के न्यादर्श को बढ़ाया जा सकता है।
- शिक्षिकाओं को प्रोन्नति के प्रयाप्त अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित की जाये।
- विद्यालयों में समय-समय पर सेमिनार गोष्ठियां एवं शैक्षिक भ्रमण इत्यादि कार्यक्रम सुनिश्चित किए जाये।

संदर्भ ग्रन्थ

1. बोवेरी पी., प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन, मानव संसाधन का विकास, 1994, पृष्ठ सं. 279-293
2. बबकुट्टे ए. एफ. एवं सलीह डब्ल्यू. डी., इंटरनेट इनसाइड्सः शिक्षाविद इंटरनेट का उपयोग कैसे कर रहे है पुस्तकालयों में कंम्यूटर, 1995, पृष्ठ सं. 6-32
3. घाली विजया लक्ष्मी, शिक्षक प्रभावशीलता और कार्य-महिला शिक्षकों की संतुष्टि, एजुकेशन ट्रैक, 2005, 4, पृष्ठ सं. 29-30
4. आहूजा राम, सामाजिक अनुसंधान, रावत पब्लिकेशन, 2007, पेज नं. 137
5. सिंह जयप्रकाश, पूर्ण शिक्षण और कार्य संतुष्टि के बीच संबंधः एक अध्ययन उ.प्र. में स्व-वित्तपोषण में कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाओं के बीच, इंडियन जर्नल एप्लाइड अनुसंधान, 2013
6. तोमर एस. के., शिक्षक प्रभावशीलता और नौकरी का एक अध्ययनः संतुष्टि और माध्यमिक विद्यालय, इंडन जर्नल ऑफ रिसर्च, 2015, 4, पृष्ठ. सं. 95-96
7. अग्रवाल श्वेता, उच्च माध्यमिक बालक एवम् बालिकाओं के संगठनात्मक वातावरण का शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन, जर्नल ऑफ एजुकेशनल एंड साइकोलॉजिकल रिसर्च, 2015, वां 7, नं. 10, पृष्ठ नं. 47-52

8. यादव विजय बहादुर, सरकारी एवं गैर-सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन, जर्नल, 2018, 4, पृष्ठ सं. 1064-1071
9. भट्ट एम.एस. एंड मीर एस.ए., परसिव्ड स्कूल क्लाइमेट एंड एकेडमिक एचिवमण्ड ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर जेण्डर एंड टाइप ऑफ स्कूल, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस एजुकेशनल रिसर्च, वॉ 3, 2018, पृष्ठ नं. 620-628
10. गुप्ता विजय एवं कुमारी राखी, सरकारी एवं निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन, बहुविषयक शैक्षणिक अनुसंधान, 2019
11. शर्मा अंजु, उच्च माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान जर्नल, 2020, 3, पृष्ठ सं. 115-119
12. विश्वकर्मा जागृति एवं मौर्य दिनेश, सरकारी तथा गैरसरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा कार्य संतुष्टि पर लेख, अनुसंधान जर्नल, 2021 पृष्ठ सं. 11296-11301
13. उपाध्याय आशुतोष, सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन, रचनात्मक अनुसंधान विचारों का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 2021, 9, पृष्ठ सं. 310-329